International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-09-2020; Accepted: 27-09-2020; Published: 13-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 114-115

समकालीन हिंदी प्रवासी साहित्य

विजयश्री सातपालकर

शोध छात्रा, कार्मल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गोवा, भारत

सारांश

वर्तमान दौर ने हिंदी साहित्य ने देश की सीमाएँ लांघकर अंतर्राष्ट्रीय सरोकार स्थापित कर दिए हैं। हिंदी साहित्य को अधिक समृद्ध बनाने के लिए भारतियों के साथ प्रवासी रचनाकार भी अपनी लेखनी चला रहे हैं। प्रवासी साहित्य में प्रवासियों का जीवन परिलक्षित होता है। समकालीन दौर में प्रवासी रचनाकारों के साथ रचनाओं में भी बढ़ोतरी हुई है। देश प्रेम से ओतप्रोत प्रवासी हिंदी साहित्यकार दूसरे देश में वास कर हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए अपना भरकस योगदान दे रहे हैं। भारत में भी प्रवासी साहित्यकारों को सम्मान और प्रेम दिया जा रहा है।

मूल शब्द: भारतियों, साहित्यकारों, समकालीन, देश

प्रस्तावना

साहित्य के क्षेत्र में अनेक विषय दृष्टिगोचर होते हैं। इन विषयों में प्रवासी साहित्य अपना मौलिक एवं विशिष्ट स्थान है। आज हिंदी भाषा एक राष्ट्र तक सीमित न रहकर अंतर्राष्ट्रीय सरोकार बना रही है। भारत में रचनाकार हिंदी भाषा में साहित्य का सृजन कर रहे है तो भारत से दूर दूसरे देशों में निवास कर रहे भारतीय विदेशी पृष्टभूमि में हिंदी में साहित्य का सृजन कर रहे हैं। इनके साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी शब्द 'प्रवास' का विशेषण है।

प्रवास मनुष्य की स्वाभाविक प्रक्रिया है। आदिकाल से ही मनुष्य रोजी रोटी के लिए भिन्न-भिन्न जगहों पर प्रवास करता रहा है। उसी प्रकार वर्तमान में भी मनुष्य अपनी रोजीरोटी, आर्थिक उच्चता और सुविधाओं और अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए अपना देश छोड़कर दूसरे देश में स्थापित हो जाता है। प्रवास का संकल्प हर व्यक्ति के लिए एक समान नहीं होता। इतिहास से ज्ञात होता है कि भारत पर यूरोपियन जातियों का आदीपत्य रहा हैं। "भारत में जब यूरोपियन जतियों का आदीपत्य हो गया तो उन्होने भारत के साथ-साथ अनेक देशों में अपने अनेक उपनिवेश स्थापित किए और वे अपने-अपने उपनिवेशी देशों में भारतियों को यह मालूम नहीं था कि उन्हें कहाँ तथा किस उद्देश्य से जहाज में बैठकर ले जाया जा रहा है। यह भारतीयों का ऐसा यातनामय प्रवास था कि उन्हें मौरिशस, फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटिश गयाना आदि देशों में पहुँचकर ही ज्ञात होता था कि उन्हें धोके में रखकर खेतों में काम करने के लिए मजदूर बनाकर लाया गया है।"1

इन गिरमिटिया लोगों में अधिकांश पूर्वी भारत के लोगों का समावेश था जो अपने साथ 'रामचरितमानस', 'हनुमान चालीसा' आदि धार्मिक ग्रांथ साथ ले गए थे। जिससे उन्हें जीवित रहने के लिए सहा मिलता रहा। "मौरिशस फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि देशों में जानेवाले भारतीय अशिक्षित एवं निर्धन श्रमिक थे, देहाती लोग थे जिन्हें भ्रम एवं प्रलोभन में रखकर मातृभूमि से हजारों मील दूर जहाज में भेड़-बकरियों की तरह भरकर भेज दिया गया था"2। इन लोगों को घोर यातनाओं एवं कठनाइयों से गुजरना पड़ा। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत भी आजीविका के लिए इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में जाते रहे और वही के होकर रह गए। इसी प्रकार भारतीय मूल के लोग पूरे विश्व फैल गए।

प्रवास के बाद प्रवासी लेखक अपने नए परिवेश को आत्मसात करने लगता है। परिवेश बदलने के कारण नूतन सोच, विचार, दृष्टिकोण, मान्यताओं को लेखक ग्रहण करता है। उनकी मान्यताएँ सामाजिक परिवेशों से प्रभावित होती रहती है। जिसे वे अपने साहित्य में स्थान देने लगे। तमाम जटिलताओं के बावजूद प्रवासी लेखक ऐसी भाषा में अपनी लेखनी चलाने लगा जो वहाँ की भी नहीं है। विदेश में बैठकर प्रवासी हिंदी भाषा में साहित्य सृजन करता है। अपनी भाषा के माध्यम से ही प्रवासी लेखक अपने देश से संबंध बनाए रखता है। प्रवासी साहित्य में प्रवासी मनुष्य की जटिलताओं, विषमताओं और संघर्ष को देखा जा सकता है। यह लेखक दूसरे देश में रहकर अपनी संस्कृति, मूल्यों का अन्वेषन करके साहित्य जगत को नया दृष्टिकोण प्रदान करता है।

'प्रवासी हिन्दी साहित्य' साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उपलब्ध है, कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वृतांत, आत्मकथा आदि का समावेश है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने सृजन से भारतीयता को आज भी सुरक्षित रखा है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में हरीशंकर आदेश का नाम अग्रेणी है। इनकी तीन सौ से भी अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई है। वर्षों पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर लेकर गए भारतियों की मदद कर आदेश जीने वेस्ट इंडीज में भारतीय विद्या संस्थान का निर्माण कर बी॰ ए॰ स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। हरीशंकर आदेश जी की तीन सौ से भी अधिक रचनाएँ उपलब्ध है जिनमें 'भागवतगीता' का हिन्दी और अँग्रेजी पद्यानुवाद, नाटक, एकांकी, जीवनियाँ आदि। आदेश जी को अनेक सम्मानों से नवाजा गया हैं जिसमें 'प्रवासी भारतीय साहित्यकार' प्रमुख है।

मौरिशस में प्रवासी हिंदी साहित्य की लंबी परंपरा रही है। इसमें अभिमन्यु अनंत का नाम अग्रेणी है। अभिमन्यु अनंत को मौरिशस के 'कथा-साहित्य सम्राट' के नाम से जाना जाता है। बेरोजगारी के साथ समकालीन समस्याओं पर अभिमन्यु अनंत ने अपनी लेखनी चलायी। "हिंदी के अध्यापन एवं नाट्य प्रशिक्षण से जुड़े रहे अनंत ने अपने विभिन्न हिंदी उपन्यासों और

कहानियों के माध्यम से मौरिशस को समकालीन विश्व हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मुकाम प्रदान करवाया।"3 हरीशंकर आदेश के अलावा हिन्दी प्रवासी लेखकों में अभिमन्यु अनंत, सुषम बेदी, तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे, कृष्ण कुमार, दिव्या माथुर, पुर्णिमा वर्मन आदि शामिल है।

विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति काफी दृढ़ है। आज हिंदी भारत की सीमाएं लांघकर राष्ट्रीय सरोकार स्थापित कर रही है। इसका श्रेय अगर प्रवासी साहित्य को दिया जाय तो गलत नहीं होगा। विश्व के लगभग सभी देशों में हिंदी का अध्ययन- अध्यापन हो रहा है। किन्तु सभी देशों में हिंदी में साहित्य सृजन नहीं होता। देश प्रेम से ओतप्रोत प्रवासी हिंदी साहित्यकार दूसरे देश में वास कर हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए अपना भरकस योगदान दे रहे हैं। भारत में भी प्रवासी साहित्यकारों को सम्मान और प्रेम दिया जा रहा है। और उनके साहित्य को आनंद से पढ़ा जाता है। वर्तमान दौर में विश्व के ज़्यादातर देशों में हिंदी प्रेमी प्रवासी साहित्यकार के चलते अध्ययन- अध्यापन और साहित्य सर्जना की नींव रखी है। केवल इतना ही नहीं हिंदी में शोधकार्य भी कराया जा रहा है। जिससे हिंदी साहित्य एवं भाषा को विकसित किया जा रहा है।

पहले प्रवासी साहित्य की तुलना में आज का प्रवासी साहित्य अलग है। तकनीकी विकास के कारण आज का प्रवासी साहित्य जन-जन तक पहुँच गया है और भारत से दूर रहकर भी इंटरनेट के जरिये सन्निकट हो गया है। प्रवासी साहित्य में भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद प्रवासी जीवन की त्रासदी, आजनबीपन, परिवार से दूरी आदि को देखा जा सकता है। इन सबके अतिरिक्त प्रवासी कथाकारों ने स्त्री को अंतर्द्वंद्व, त्याग, संघर्ष को बखूबी अपने साहित्य में उकेरा है। इन कथाकारों में उषा प्रियंवदा, सुषम बेदी (अमेरिका), उषा राजे सक्सेना, दिव्या माथुर (इग्लैंड), सुधा ओम ढींगरा (केनडा), दीपिका जोशी(कुवैत), पुर्णिमा बर्मन (संयुक्त अरब अमीरात), अर्चना पेन्यूली (डेनमार्क), कविता वाचक्नवी(नार्वे), भावना कुँवर(युगांडा एवं सिडनी) आदि महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों तथा उपन्यासों में सशक्त स्त्री पात्रों की सृष्टि की है।"[4]

प्रवासी साहित्य में अमेरिका के 'प्रवासिनी के बोल' कविता संकलन का उल्लेख करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंजना संधीर द्वारा संपादित इस कविता संकलन में सिर्फ हिंदी प्रवासी कवयित्रियों का ही समावेश है। "हिंदी के प्रवासी साहित्य में यह इस प्रकार का पहला प्रयोग है जिसमें 81 प्रवासी हिंदी कवयित्रियों की 324 कविताएं संकलित हैं तथा 33 हिंदी महिला प्रतिभाओं के परिचय के साथ अमेरिका की 38 हिंदी लेखिकाओं की 111 हिंदी पुस्तकों की सूची भी दी गयी है।"5

इससे ज्ञात होता है कि भारी मात्रा में प्रवासी रचनाकार रचनाओं का सृजन कर पुस्तके भी प्रकाशित कर रहे है। इन पुस्तकों के द्वारा ही यह लेखक अपनी विशिष्ट पहचान बना रहे है। इन कविताओं के माध्यम से स्त्री-मनोविज्ञान को समझने का एक रास्ता प्रदान करती है।

निष्कर्ष

रूप में कह सकते है कि प्रवासी साहित्यकार भावनात्मक रूप से भारत से जुड़ा है जो उसकी रचनाओं में झलखता है। विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में हिंदी में सर्जनात्मक एवं ज्ञानात्मक साहित्य का निर्माण हो रहा है। आज प्रवासी साहित्य ने हिंदी कि नई प्रशाखा खोल दी है। जिसके चलते हिंदी भारत की सीमाएँ लांघकर अंतर्राष्ट्रीय सरोकार स्थापित कर रही है। इस प्रवासी साहित्य ने नए परिवेश, विचार, जीवन शैली एवं साहित्यिक संसार हमें प्रदान किया है। आज प्रवासी साहित्य के अंतर्गत विपुल मात्रा में साहित्य सर्जन हो रहा है जो भारत में भी पठनीय है। हिंदी को वैश्विक स्तर पर समृद्ध बनाने का श्रेय प्रवासी हिंदी साहित्य और उसके रचनाकारों को देना उचित होगा।

संदर्भ सूची

1. बिजेन्द्र. प्रवासी साहित्य: एक सर्वेक्षण, international journal of Advance Research and Development 2018; vol-3, पृ॰ 891।
2. बिजेन्द्र. प्रवासी साहित्य: एक सर्वेक्षण, international journal of Advance Research and Development 2018; vol-3, पृ॰ 891।
3. रेणु. समकालीन प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता, paripex-Indian journal of research 2019; VOL-8, पृ॰ 08।
4. डॉ॰ संदीप रणभिरकर. विदेशों में हिंदी साहित्य: सृजनात्मकता के विविध आयाम, सरहद ई पत्रिका 2017; vol- 2, पृ॰5-6।
5ण डॉ॰ कमल किशोर गोयनका, 2011, हिंदी का प्रवासी साहित्य, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, पृ॰ 414।